(नियमसार प्रवचन, पृष्ठ 23 का शेष ...)

ह्न ऐसा कहते हैं। वह भव्यजीवों का समूह यही कहता है कि एक शुद्धात्मा को ही भाओ।

भव्यसमूह माने जो लायक जीव हैं, वे शुद्धात्मा को यानी कि परमानन्दमय प्रभु ध्रुव चैतन्य आनन्दस्वरूप एक आत्मा को भजो। देखो, यहाँ उस एक की ही सेवा करने को कहते हैं, किसी ओर की नहीं; क्योंकि देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति से कल्याण नहीं होता तथा दया, दान, व्रत, भक्ति के राग से भी कल्याण नहीं है। इस एक समय की वर्तमानदशा को भजने से भी कल्याण नहीं है।

भाई ! यहाँ तो आत्मा की बात है। यह आत्मा प्रभु है, सच्चिदानन्द की मूर्ति है। उसमें अनन्त-अनन्त शक्तियाँ हैं। अहा ! वह अनन्त अतीन्द्रिय आनन्द से परिपूर्ण है, इसलिये भव्यसमूह ऐसे एक शुद्धात्मा को ही भजो। देखो, शुद्धात्मा को एक को भावें, अन्य को नहीं ह्न ऐसा कहते हैं।

मैं अखण्डानन्द शुद्ध चैतन्यमय धातु हूँ, चैतन्यस्वरूप हूँ ह्न ऐसे निजस्वरूप के सन्मुख होकर उसमें एकाग्र होना, ध्यान में उसकी भावना करना, वर्तमान ज्ञान की दशा का ध्येय-विषय ध्रुव को बनाना ह्न उसको भावना कहा जाता है और उसी का नाम धर्म है। **(क्रमशः)**

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ

आवश्यक सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के नये सत्र के लिये प्रवेश प्रक्रिया चालू है। इच्छुक छात्र स्वयं का पता लिखकर 5/-रुपये का टिकिट लगा हुआ लिफाफा निम्न पते पर भेजकर प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं।

प्रवेश फार्म भरकर जयपुर भेजने की अंतिम तिथि 31 जुलाई है।

पता – श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 300 अंक : 12

धनि ते प्रानि, जिनके....

धनि ते प्रानि जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।टेक।।
रहित सप्त भय तत्त्वारथ में, चित्त न संशय आन।
कर्म कर्मफल की नहिं इच्छा, पर में धरत न ग्लानि।।
धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।1।।

सकल भाव में मूढ़ दृष्टि तजि, करत साम्यरस पान।
आतम धर्म बढ़ावैं वा, परदोष न उचरैं वान।।
धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।2।।

निज स्वभाव वा, जैनधर्म में, निज पर थिरता दान।
रत्नत्रय महिमा प्रगटावैं, प्रीति स्वरूप महान।।
धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।3।।

ये वसु अंग सहित निर्मल यह, समकित निज गुण जान।
भागचंद शिवमहल चढ़न को, अचल प्रथम सोपान।।
धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।4।।

ह्न पण्डित भागचंदजी

पुद्गल का विशेष स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 27 वीं गाथा के बाद समागत 41 वें कलश पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है ह्न

(मालिनी)

अथ सति परमाणोरेकवर्णादिभास्वन्
निजगुणनिचयेऽस्मिन् नास्ति मे कार्यसिद्धि:।
इति निज हृदि मत्त्वा शुद्धमात्मानमेकम्
परमसुखपदार्थी भावयेद्भव्यलोक: ॥41॥

यदि परमाणु एकवर्णादिरूप प्रकाशते (ज्ञात होते) निजगुण समूह में हैं तो उसमें मेरी कोई कार्यसिद्धि नहीं है अर्थात् परमाणु तो एक वर्ण, एक गंध आदि अपने गुणों में ही है तो फिर उसमें मेरा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता ह्न इसप्रकार निजहृदय में मानकर, परमसुख पद का अर्थी भव्य समूह एक शुद्ध आत्मा को भाये।

यह अंगुली, शरीर, वाणी, दाल, भात, सब्जी, मकान आदि सब जड़तत्त्व हैं, मिट्टी हैं; ये आत्मा नहीं है। अहा ! अन्दर आत्मा अलग तत्त्व है और यह शरीर अलग तत्त्व है; कारण कि यह शरीर जड़-मिट्टीरूप अजीव तत्त्व है।

यहाँ कहते हैं कि इस मिट्टी (शरीर) का अंतिम अंश परमाणु है, वह निज गुण समूह में है।

अहा ! यह अंगुली कोई एकवस्तु नहीं है; यह तो बहुत परमाणु इकठ्ठे होकर बनी है तथा यह अंगुली आत्मा नहीं है; चूँकि आत्मा सच्चिदानन्द-निर्मलानन्द प्रभु शुद्ध अरूपी ज्ञानघन है; इसलिये यह अंगुली या शरीर से भिन्न है। परमाणु अपने गुण समूह में रहता है, आत्मा में नहीं रहता। एक अंगुली में रहनेवाले परमाणु एक वर्ण, एक गंध आदि निज गुण समूह में रहते हैं, किन्तु इससे मुझे क्या सिद्धि

होगी ? मैं तो आत्मा हूँ और मेरा स्वरूप तो सच्चिदानन्दमय एक ज्ञानघन है, इसलिये परमाणु में कुछ भी हो, उससे मुझे क्या ?

अहा.! **'जिसको आत्मा का अनाकुल आनन्द चाहिए, वह भव्यसमूह एक शुद्ध आत्मा को भावे।'** इसमें अभी बहुत मर्म भरा है।

यहाँ ऐसा कहते हैं कि जो यह एक-एक रजकण परमाणु है, वह स्वयं के गुण-पर्याय में रहता है, आत्मा में नहीं रहता; इसलिये हम जड़ और उसके गुणों को जानकर अपने गुण में रहेंगे। जब जड़ अपने गुणों में रहता है तो मैं चेतन अपने में क्यों न रहूँ। अहा ! मैं तो भगवान आत्मा हूँ, जिसमें ज्ञान आनन्द और शांति भरी है।

वे रजकण उनकी शक्ति और दशा में रहते हैं; परन्तु उससे हमारी कोई कार्यसिद्धि नहीं है। हमारे अपने गुण में रहने में ही हमारी कार्यसिद्धि है। भाई ! सूक्ष्म बात है। अरे ! लोगों ने तत्त्व की ऐसी बात कभी सुनी ही नहीं है।

देखो ! यहाँ सुख पद का अर्थी कहा। माने आत्मा स्वयं सच्चिदानन्दस्वरूप है, उसके सुख का अर्थी। सच्चिदानन्द = सत्+चित्+आनन्द माने शाश्वत ज्ञान और आनन्द। अहाहा...! भाषा तो देखो ! देव-शास्त्र-गुरु को भावे ह्न ऐसा नहीं कहते हैं; क्योंकि देव-शास्त्र-गुरु की भावना और उनकी भक्ति करना तो शुभराग है, पुण्य है, उससे धर्म नहीं होता है। और पुण्य करते-करते धर्म हो जायेगा ह्न ऐसा तीन काल में भी संभव नहीं है।

भगवान आत्मा अनन्त गुणवाला है। जैसे परमाणु स्पर्श, रस, गंध, वर्ण आदि वाला है; वैसे ही मैं भी ज्ञान और आनन्द आदि गुणवाला हूँ तथा जैसे परमाणु उसके जड़ गुणों में रहता है, वैसे ही मैं भी अपने आनन्द गुण में रहता हूँ और उसी से मेरी कार्यसिद्धि है। इसप्रकार परमसुख का अर्थी जीव एक निज शुद्धात्मा को ही भाता है।

अहा ! भगवान आत्मा अतीन्द्रिय आनन्द की मूर्ति है। आत्मा स्वरूप से ही अतीन्द्रिय आनन्दमय है। अत: ऐसे **सुखपद का अर्थी भव्यसमूह....!** देखो ! समूह कहकर, भव्यजीव भी बहुत हैं, भव्यजीवों का झुण्ड है **(शेष पृष्ठ 4 पर ...)**

छहढाला प्रवचन

देवगति में भी सम्यक्त्व बिना दुःख

जो विमानवासी हू थाय, सम्यग्दर्शन बिना दुःख पाय।
तहँते चय थावर तन धरे यों परिवर्तन पूरे करे।।१६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

अज्ञान के कारण संसार की चारों गतियों में जो दुःख जीव भोग रहा है, उसका वर्णन करते-करते अब इस प्रथम ढाल के अन्त में यह दिखाते हैं कि ह्न संसार में अज्ञानी का सबसे ऊँचे पुण्यस्थान वैमानिक स्वर्ग में भी सम्यग्दर्शन के बिना जीव दुःख ही पाता है।

सम्यग्दृष्टि जीव सर्वत्र सुखी है; सम्यग्दर्शन से रहित जीव सर्वत्र दुःखी है। स्वर्ग का बड़ा देव हुआ तो भी अज्ञानी जीव **'सम्यग्दर्शन बिन दुःख पाय'** । सम्यग्दर्शन के बिना सदा काल दुःख ही भोगता रहा है। आचार्य समन्तभद्र स्वामी कहते हैं कि ह्न

न सम्यक्त्व समं किंचित् त्रैकाल्ये त्रिजगत्यपि।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यत्तनूभृताम् ।।

अर्थात् तीनकाल-तीन लोक में इस जीव को सम्यक्त्व के समान सुखकारी दूसरा कोई नहीं है और मिथ्यात्व के समान दुःखकारी तीनकाल-तीन लोक में दूसरा कोई नहीं है। मिथ्यात्व की तीव्रता के कारण बहुत से जीव देव गति से मरकर सीधे एकेन्द्रिय में जाता है और महान दुःख पाता है।

इसप्रकार निगोद में से निकला हुआ जीव चार गति का भ्रमण करके फिर निगोद में चला जाता है और परिवर्तन को पूरा करता है। जीव अनन्तकाल से ऐसा परिवर्तन कर रहा है और बहुत दुःख भोग रहा है। कब मिटे जीव का यह परिभ्रमण और दुःख? ह्न जब सम्यग्दर्शन करे, तब। सम्यग्दर्शन के बिना तो नवमें ग्रैवेयक से लेकर निगोद और फिर निगोद से लेकर नवमें ग्रैवेयक तक ह्न ऐसा भवचक्र झूले की तरह घूमा ही करता है। नवमें ग्रैवेयक से ऊपर मिथ्यादृष्टि जीव नहीं जाते। उसके ऊपर ९ अनुदिश और सर्वार्थसिद्धि आदि ५ अनुत्तर विमान हैं, उनमें तो सम्यग्दृष्टि जीव ही जाते हैं; अतः उनकी बात यहाँ नहीं ली गई; क्योंकि यहाँ तो मिथ्यादृष्टि के दुःखों का कथन है। सम्यग्दृष्टि के तो अल्पसंसार बाकी रहा है और उसमें आत्म-आराधना बढ़ाते हुए वे आनन्दपूर्वक मोक्ष को साधते हैं।

जीव मिथ्यात्व के कारण पंच प्रकार के परिवर्तन में रुलता है ह्न द्रव्यपरिवर्तन,

क्षेत्रपरिवर्तन, कालपरिवर्तन, भवपरिवर्तन और भावपरिवर्तन। मिथ्यादृष्टि के द्वारा ग्रहण करने योग्य सभी परमाणुओं को जीव ने अनन्तबार ग्रहण करके छोड़ा है, अनुक्रम से लोक के सभी प्रदेशों में अनन्तबार जन्म-मरण किया है, बीस कोड़ा-कोड़ी सागर के कालचक्र के हर एक समय में उसने जन्म-मरण किया, चारों गति में मिथ्यादृष्टि के योग्य सभी भव भी उसने अनंतबार किये और मिथ्यादृष्टि के योग्य जितने शुभ-अशुभपरिणाम हैं, वे भी उसने अनन्तबार किये ह्न परन्तु सम्यग्दर्शन के बिना उसने सर्वत्र दुःख ही पाया।

कभी वैमानिक देव होकर फिर वहाँ से चय कर सीधा एकेन्द्रिय में फूल आदि वनस्पति में अथवा हीरा-मोती आदि पृथ्वीकाय में उत्पन्न हुआ। हीरा-माणिक-मोती-पन्ना ह्न ये पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय जीव हैं। करोड़ों-अरबों के मूल्यवाले हीरा-मोती, उनके द्वारा लोग अपने को सुखी मानते हैं; परन्तु वे हीरे-मोती स्वयं तो एकेन्द्रियपन के महान दुःखों से दुःखी हैं। दूसरे लोग उनकी बहुत कीमत करें, उससे उन्हें कुछ सुख नहीं मिल जाता, वे तो महान दुःखी हैं।

संसार में भ्रमण करते हुए जीव ने रौरव नरक का दुःख भी भोगा और स्वर्ग का देव होकर वहाँ भी दुःख ही भोगा; लाखों जीवों की हिंसा करनेवाले कसाई का भाव भी उसने किया और त्यागी होकर अहिंसादि पंच महाव्रत के शुभराग रूप भाव भी उसने बहुत किये; परन्तु अशुभ और शुभ के कषायचक्र में से कभी बाहर नहीं निकल सका ह्न सम्यग्दर्शनादि वीतरागभाव उसने कभी नहीं किया। आगे चौथी ढाल में कहेंगे कि ह्न

मुनिव्रतधार अनन्तबार ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतमज्ञान बिना सुख लेश न पायो।।

भले ही नवमें ग्रैवेयक में अहमिन्द्र हो; तथापि जहाँ आत्मा का ज्ञान ही नहीं है, वहाँ सुख कैसे होगा ? ज्ञान के बिना जीव ने अकेला दुःख ही दुःख पाया है।

उस दुःख का वास्तविक कारण जीव की अपनी ही भूल है। उस मिथ्याश्रद्धा-ज्ञान-चारित्ररूप भूल का त्याग करने के लिए, अब उसका वर्णन दूसरी ढाल में करेंगे और फिर उसके बाद मोक्षसुख के कारणरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का वर्णन करेंगे।

अहो, जैन सन्तों ने दुःखी जीवों के ऊपर करुणा करके, दुःख से छूटने और सच्चा आत्मसुख पाने का उपाय दिखाया है, मोक्ष का मार्ग दिखाकर महान उपकार किया है।

हे भाई ! यदि तुम्हें चार गति रूप संसार के दुःखों से मुक्त होकर मोक्षसुख पाना हो तो मिथ्यात्वादि को अत्यन्त दुःख का कारण समझकर शीघ्र ही उसका सेवन छोड़ो और सम्यक्त्वादि को परमसुख का कारण जानकर उसकी आराधना में आत्मा को जोड़ो। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : जीव को शरीरवाला अथवा रागवाला कहना तो व्यवहार से कथन है; किन्तु जीव को सम्यग्दर्शनवाला तो कह सकते हैं न ?

उत्तर : जीव को सम्यग्दर्शनवाला कहना भी पर्याय की ओर से किया गया व्यवहार कथन है। जीव तो विज्ञानघनस्वरूप है। सम्यग्दर्शन पर्याय तो एक अंश है; जबकि जीव त्रिकाली विज्ञानघनस्वरूप है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन और आत्मा भेदरूप हैं या अभेदरूप है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शनादि निर्मलपर्याय और आत्मा अभेद है। राग और आत्मा में तो स्वभाव भेद है; किन्तु सम्यग्दर्शन और शुद्धात्मा अभेद है। परिणति स्वभाव में अभेद होकर परिणमित हुई है, आत्मा स्वयं अभेदपने उस परिणतिरूप से परिणमित हुआ है ह्न उसमें भेद नहीं है। व्यवहार सम्यग्दर्शन तो विकल्परूप है, वह आत्मा के साथ अभेद नहीं है।

प्रश्न : कहीं-कहीं शुद्धपर्याय को आत्मा कहा है, उसका क्या आशय है ?

उत्तर : अलिंगग्रहण के 20 वें बोल में ध्रुव को स्पर्श नहीं करनेवाली शुद्धपर्याय को आत्मा कहा है, वहाँ वेदन की अपेक्षा कहा है; क्योंकि आनन्द का वेदन परिणति में है, त्रिकाली में वेदन नहीं होता; इसलिये जो वेदन में आया, वह मैं हूँ ह्न ऐसा कहा है। जहाँ जैसा आशय हो, वैसा समझना चाहिए।

सम्यग्दर्शन का विषय त्रिकाली ध्रुव सामान्य है, वही सर्वतत्त्वों में सार है। वस्तु स्वयं ध्रुवरूप है, उसका लक्ष्य करने से सम्यग्दर्शन होता है।

प्रश्न : पहले ज्ञान जानने में आता है या आत्मा ? दोनों की प्रसिद्धि में कितना अन्तर है ?

उत्तर : दोनों एक साथ ही जानने में आते हैं। आत्मा को लक्ष्य में लिये बिना ज्ञान को किसका लक्षण कहना ? आत्मा को लक्ष्य में लेने पर ज्ञान उसमें अभेद हुआ, तब आत्मा उसमें लक्षित हुआ और ज्ञान उसका लक्षण हुआ; इसप्रकार लक्षण और लक्ष्य ह्न दोनों की प्रसिद्धि एकसाथ ही है।

40 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1352 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 17 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में लगभग 42 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 380 एवं बाल कक्षाओं में 157 विद्यार्थी सम्मिलित । * शिविर में 80 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 2240 घण्टों के सी.डी. व कैसिट्स बिके।**

तीर्थधाम मंगलायतन (अलीगढ-उ. प्र.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं तीर्थधाम मंगलायमन द्वारा दिनांक 18 मई से 4 जून, 08 तक आयोजित 42 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

● **उद्घाटन समारोह** की अध्यक्षता श्री हर्षवर्धनजी, औरंगाबाद ने की। इस प्रसंग पर प्रात:काल जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें पूरे हिन्दुस्तान से पधारे हुए युवक-युवतियों और साधर्मियों ने भाग लिया। श्रीजी को रथ में लेकर साथ चलने का सौभाग्य श्री पृथ्वीचन्दजी जैन को प्राप्त हुआ।

शोभायात्रा के पश्चात् श्री बाहुबली मंदिर में जिनेन्द्र पूजन की गई। मानस्तम्भ परिसर में श्री प्रदीपजी-तिलकजी चौधरी, किशनगढ के करकमलों से ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

समारोह में पण्डित कैलाशचन्दजी अलीगढ़, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि विद्वान मंच पर विराजमान थे। मुख्यअतिथि के रूप में श्री जीवन्धरजी जैन गाजियाबाद, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री ग्वालियर, श्री महाचन्दजी सेठी इम्फाल, श्री जे.के. बोथरा, डॉ. प्रभातजी गाजियाबाद, श्री अजित जैन बडौदा, श्री अजित जैन दिल्ली एवं श्री मुकेश जैन इन्दौर मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि अध्यात्म विद्या को संगमरमर के पत्थरों पर खुदवाकर सुरक्षित नहीं किया जा सकता; अपितु कोमलमति बालकों में तत्वज्ञान को प्रतिष्ठित करने पर ही जिनधर्म सुरक्षित रह सकता है।

अंत में श्री पवनजी जैन अलीगढ़ ने सभी महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुये कहा कि तीर्थधाम मंगलायतन विश्वभर में अध्यात्म का प्रचार तन-मन-धन से निरन्तर करता रहेगा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित अशोकजी लुहाड़िया के निर्देशन में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर ने किया।

● **प्रात: कालीन प्रवचन ह्न** प्रतिदिन प्रात: आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के

समयसार ग्रंथाधिराज की गाथा 18 से 25 तक मार्मिक प्रवचन हुये।

● **रात्रि कालीन प्रवचन ह्न** रात्रिकालीन प्रवचनों के क्रम में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. राकेशजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित देवेन्द्रजी जैन मंगलायतन, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे राजकोट, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली एवं श्री पवनजी जैन मंगलायतन के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

● **दोपहर की व्याख्यानमाला में ह्न** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचंदजी द्रोणगिरि, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, ब्र. विनोदजी जैन खेकड़ा, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सुधीरजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, डॉ. सतीशजी अलीगढ़, पण्डित महावीरप्रसादजी अजमेरा एवं पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

● **प्रशिक्षण कक्षायें ह्न** बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री व पण्डित कोमलचन्दजी टडावालों ने ली।

● **प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में** ह्न पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलजी जैन जैनापुरे राजकोट, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री कोटोल, श्री महेशजी भोपाल, डॉ. सतीशजी शास्त्री अलीगढ, पण्डित सुधीरजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, श्रीमती रंजनाजी बंसल अमलाई, श्रीमती स्वर्णलताजी जैन मंगलायतन एवं श्रीमती लताजी जैन देवलाली का सहयोग मिला।

● **प्रौढ़ कक्षायें ह्न नयचक्र** की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्रीदेवलाली, **गुणस्थान विवेचन** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, **मोक्षमार्ग प्रकाशक** की कक्षा पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, **नियमसार** की कक्षा पण्डित देवेन्द्रजी मंगलायतन,**तत्त्वार्थसूत्र** की कक्षा पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली, **द्रव्यसंग्रह** की कक्षा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं **रहस्यपूर्ण चिट्ठी** की कक्षा पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने ली।

प्रात: 5 बजे की **प्रौढ़ कक्षा** में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित कमलचंदजी

पिड़ावा, पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री मंगलायतन का लाभ मिला।

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन पण्डित बाबूभाई मेहता एवं श्रीमती शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया के निर्देशन में किया गया; जिसमें लगभग 157 छात्र सम्मिलित हुये।

ज्ञातव्य है कि अभ्यास कक्षायें हिन्दी एवं मराठी भाषाओं में संचालित होती थी।

शिविर के दौरान एक दिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित पश्चाताप खण्डकाव्य की सी.डी.उन्हीं के सान्निध्य में चलाई गई, जिसे उपस्थित जन-समुदाय ने मंत्र मुग्ध होकर सुना तथा मुक्त कंठ से इसकी सराहना की। इसी पश्चाताप खण्डकाव्य के आधार से पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संगीतमय कथा का आयोजन किया गया।

● **विमोचन :** शिविर में जैन के.जी. भाग-6,7 (हिन्दी व अंग्रेजी), आगम प्रवेश, प्रवचनसार (ज्ञान-ज्ञेय तत्त्व प्रबोधिनीटीका), चलते-फिरते सिद्धों से गुरु, जान रहा हूँ देख रहा हूँ, धन्य मुनिराज हमारे हैं आदि पुस्तकों के अतिरिक्त पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा द्वारा रचित समयसार वचनिका नामक विशिष्ट ग्रन्थ का विशेष समारोह में उत्साहपूर्वक विमोचन किया गया।

● **प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन एवं दीक्षान्त समारोह ह्न** बुधवार, दिनांक 4 जून को दोपहर में आयोजित इस समारोह में अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन श्री संजयजी शास्त्री ने किया। आभार प्रदर्शन श्री पवन जैन ने किया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पश्चात् पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि एवं पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा-परिणाम प्रस्तुत किया।

जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 3 से 14 मई, 08 तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में बाल ब्र. श्री रवीन्द्रकुमारजी अमायन एवं बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में चतुर्थ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इसके अन्तर्गत देवनगर, भिण्ड, अमायन, मौ, मेहगाँव, गोहद, गोरमी, पोरसर, अम्बाह, पालनपुर, ग्वालियर, भितरवार, करैरा, कोलारस, रन्नौद, लुकवासा, बदरवास, शिवपुरी, खनियांधाना, फिरोजाबाद, मैनपुरी, इटावा, ललितपुर आदि 71 स्थानों पर शिविरों का आयोजन किया गया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के 40, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन अलीगढ़ के 28, श्री अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय बाँसवाड़ा के 16 एवं अन्य स्थानों से पधारे कुल 142 विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

जन्मदिवस के अवसर पर –

मंगलायतन तीर्थधाम ने दिया डॉ. भारिल्ल को सरप्राइज

दिनांक 25 मई, 2008 रविवार को जब डॉ. हुकमचंद भारिल्ल प्रवचनार्थ प्रवचन मण्डप में पहुँचे तो बिना किसी पूर्व घोषणा के मंगलायतन के कार्यकर्त्ताओं ने उन्हें जन्मदिवस की बधाईयाँ देना आरम्भ कर दिया तो जनसमुदाय आश्चर्यचकित हो उठा और यह जानकर कि आज डॉ. भारिल्ल का जन्मदिन है, बड़ी प्रसन्नता से आयोजन में सहभागी हो गया।

लगभग 1 घंटे 30 मिनट तक चले इस कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल को उनके उपस्थित सम्पूर्ण परिवार सहित मंच पर बैठाकर उनके सम्मान में लिखित गीत गाया गया और सुन्दरतमरूप में सुसज्जितकर उन्हें समर्पित किया गया। अनेक वक्ताओं ने उनके विविध आयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और अन्त में तीर्थधाम मंगलायतन के सर्वेसर्वा कर्मयोगी पवन जैन ने कहा-

'मुझे यहाँ ऐसा कोई नहीं दिखाई देता, जो डॉ. भारिल्ल का उपकार न मानता हो। इन्होंने सारे संसार को पढाया है, मैं भी उनमें से एक हूँ। इन्होंने मुझे छहढाला पढाई थी। ये भले ही जोर से न कहें, पर मैं कहता हूँ, मैं इनका शिष्य हूँ। डॉ. भारिल्ल जो कुछ करते हैं, यहाँ तक कि उनके जिन कार्यों की आलोचना की जाती है, उन सहित उनके समस्त कार्यों के पीछे भी जिनधर्म, गुरुदेव और तत्त्व की प्रभावना ही है, अन्य कुछ नहीं।

बस अब आखिरी बात यह कह रहा हूँ कि डॉ. भारिल्ल ! आप हम पर, मंगलायतन पर ऐसा ही प्रेम सदा बनाये रखें। हमारे दोषों पर हमारा मार्गदर्शन करते रहें। व्यवहार में कहा जाता है कि आप शतायु हों; परन्तु हमारी भावना है कि अब आगे हम सब आपका जन्मदिन नहीं, जन्मकल्याणक मनायें।'

अंत में डॉ. भारिल्ल ने उक्त संदर्भ में विचार व्यक्त करते हुए कहा -

''मुझे पता नहीं था कि यहाँ इतना आडम्बर होने जा रहा है। आप सभी ने मेरे प्रति जो वात्सल्य भाव प्रगट किया है, मेरा सम्मान किया है, वह उस तत्त्वज्ञान का सम्मान है कि जिसके आलोकन में, प्रचार-प्रसार में मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है। उक्त चिन्तन के आधार पर ही मैं उक्त आभार के भार से उबर रहा हूँ।''

(आगामी कार्यक्रम...)

टोडरमल स्मारक में विशिष्ट कक्षायें

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 1 से 8 जुलाई तक ब्र. हेमचंदजी हेम'देवलाली' द्वारा दोनों समय प्रवचनसार के दूसरे अधिकार के आधार से विशिष्ट कक्षा ली जायेंगी।

साथ ही दिनांक 15 से 25 जुलाई तक श्री दिनेशभाई शाह द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की तथा डॉ. उज्जवलाबेन शाह द्वारा कारण-कार्य रहस्य की कक्षाओं का लाभ भी प्राप्त होगा।

इस अवसर पर कक्षाओं का लाभ लेने के लिये जयपुर के बाहर से पधारने वाले साधर्मियों के आवास की नि:शुल्क और भोजन की सशुल्क व्यवस्था रहेगी।

फैडरेशन का 29वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

मंगलायतन-अलीगढ में दिनांक 25 मई, 08 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 29वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन का आयोजन 2 सत्रों में किया गया। दोपहर के प्रथम सत्र की अध्यक्षता फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री मुकेशजी तन्मय विदिशा ने की, मुख्यअतिथि के रूप में श्री अजितजी जैन दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री आदीशजी जैन दिल्ली मंचासीन थे। इसके अतिरिक्त फैडरेशन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यगण, प्रान्तीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष/मंत्री, सलाहकार एवं सभी विद्वत्गण भी मंचासीन थे।

रात्रिकालीन द्वितीय सत्र में अध्यक्ष के रूप में श्री स्वप्निलजी जैन मंचासीन थे। आपके अतिरिक्त पण्डित कैलाशचन्दजी जैन, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं अनेक विद्वान भी मंचासीन थे।

अधिवेशन के प्रथम सत्र में श्री देवेन्द्रजी बडकुल भोपाल, श्री नवनीतजी जैन मेरठ, श्री राकेशजी शास्त्री दिल्ली, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, श्री शांतिनाथजी खोत कोल्हापुर, श्री अरुणजी जैन भोपाल, पण्डित पुष्पेन्द्रकुमार जैन भिण्ड, श्री माधवप्रसाद शास्त्री शाहगढ, पण्डित विरागजी शास्त्री नागपुर, पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली एवं पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट ने प्रतिनिधि के रूप में अपने-अपने क्षेत्रों में चल रही फैडरेशन की गतिविधियों, तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की अनेक योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत की।

फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री ने सभी वक्ताओं के विचार सुनने के उपरान्त सभी के वक्तव्य की समीक्षा करते हुये अपना उद्बोधन दिया। फैडरेशन के सलाहकार बोर्ड के सदस्य पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, श्री पवनकुमारजी अलीगढ ने भी संगठन के नीति-निर्धारण के संबंध में महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये। राष्ट्रीय मंत्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में फैडरेशन की शाखाओं को सदस्यता अभियान प्रारंभ करने का आह्वान किया। फैडरेशन के निर्देशक मंडल के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने भी सभा को अपना महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया।

अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे श्री मुकेशकुमारजी ने सभी सदस्यों को उनके द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिये साधुवाद दिया और अब युवा फैडरेशन के कार्य में जोर-शोर से जुट जाने के लिये आह्वान किया।

पण्डित गणतंत्रजी जैन बांसवाडा ने काव्यपाठ प्रस्तुत किया एवं मंगलाचरण श्रीमती ज्योति जैन ने किया। अंत में फैडरेशन के राष्ट्रीय गीत मैं ज्ञानानन्द स्वाभावी हूँ के गानपूर्वक सभा का विसर्जन हुआ।

अधिवेशन के दूसरे सत्र में फैडरेशन की शाखाओं व उनके कार्यकर्ताओं को उनकी उपलब्धियों के लिये पुरस्कृत किया गया।

अधिवेशन के दोनों सत्रों का संचालन संगठन मंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। ●

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग सम्पन्न

तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ : यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के 29वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर दिनांक 24 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों की मीटिंग डी.पी.एस., अलीगढ के लेंगवेज लैब में आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा ने की।

इसमें फैडरेशन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों श्री विजयकुमारजी बड़जात्या इन्दौर, मलूकचंदजी विदिशा, अभयकुमारजी टडैया ललितपुर, गणतंत्र शास्त्री बांसवाड़ा, पवनकुमारजी जैन किशनगढ, धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पीयूषजी शास्त्री, राजेशजी शास्त्री जयपुर, रितेशजी जैन इन्दौर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, नवनीत जैन मेरठ, महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, आदीशजी जैन दिल्ली, डॉ.उत्तमचंदजी भारिल्ल अजमेर एवं शांतिनाथजी खोत कोल्हापुर ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

प्रतिनिधियों की ओपन मीटिंग

तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ : यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के 29वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर दिनांक 24 मई की रात्रि में भगवान महावीर जिनालय में फैडरेशन के प्रान्तीय प्रतिनिधियों की ओपन मीटिंग सम्पन्न हुई, जिसमें नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, सुरेशचंदजी जैन देवनगर भिण्ड, डॉ. भरतजी जैन उज्जैन, देवेन्द्रजी बड़कुल भोपाल, मुकेशजी जैन मेरठ तथा जयकुमारजी जैन पिड़ावा ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

राजस्थान प्रदेश के पदाधिकारी/कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण शिविर किशनगढ में

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश एवं शाखाओं के पदाधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 20 जुलाई, 08 को पहली बार किशनगढ (अजमेर) में आयोजित होने जा रहा है।

इस प्रशिक्षण शिविर में आनेवाले पदाधिकारियों को संगठन की कार्यप्रणाली का प्रशिक्षण राष्ट्रीय महामंत्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मंत्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं महिला प्रकोष्ठ की संयोजिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा दिया जायेगा।

कार्यक्रम के आयोजनकर्त्ता फैडरेशन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी हैं।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष एवं अन्य प्रदेश पदाधिकारी सभी शाखाओं के चुनाव एवं नवीन शाखाओं के गठन का कार्य सम्पन्न करेंगे।

ह्न डॉ. उत्तमचन्द भारिल्ल, अजमेर ह्न प्रदेशाध्यक्ष (राज.)
जिनेन्द्र शास्त्री, उदयपुर ह्न प्रदेश प्रतिनिधि (राज.)

फैडरेशन का महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ दिनांक 18 मई 2008 को नव निर्मित श्री वीतराग-विज्ञान भवन में ग्रुप शिविर के भव्य समापन समारोह के पश्चात् दोपहर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर महाराष्ट्र की विभिन्न शाखाओं से पधारे प्रतिनिधियों ने अपनी शाखा के माध्यम से हो रही तत्त्वप्रचार की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुये भावी प्रगति के लिये सुझाव दिये साथ ही इस कार्य में आने वाली समस्याओं को भी प्रस्तुत किया। ग्रुप शिविर के अवसर पर विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में शिक्षण कराकर लौटे विद्वानों ने भी वहाँ की शाखाओं की गतिविधियों का परिचय कराया।

इस प्रसंग पर श्री नरेशकुमारजी सिंघई नागपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, श्री विश्वलोचनजी जैनी नागपुर, पण्डित विपिजी शास्त्री श्योपुर, श्री गंगाधरजी महाजन वसमतनगर एवं मलकापुर व अन्य शाखाओं के प्रतिनिधियों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा एवं पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री मांगुलकर काटोल ने अपने वक्तव्य में प्रतिनिधियों द्वारा बताई गई समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किये।

फैडरेशन की नागपुर शाखा के अध्यक्ष श्री संदीपजी जैनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पाठशाला समाज की प्रारंभिक आवश्यकता है, जिससे संस्कारों की नीव मजबूत होती है; इसलिये प्रत्येक शाखा को अपनी गतिविधियों का प्रारंभ पाठशाला से करना चाहिये।

अध्यक्षीय भाषण में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि हमें अपने व्यक्तिगत मतभेदों को दूर रखकर फैडरेशन के संगठन को मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिये। उन्होंने आधुनिक संचार साधनों का लाभ उठाते हुये सभी शाखाओं में परस्पर सम्पर्क की आवश्यकता पर बल दिया तथा सभी सदस्यों से निवेदन किया कि अपने नये मोबाईल नं. व ई-मेल एड्रैस केन्द्रीय कार्यालय को उपलब्ध करायें।

इस प्रसंग पर डॉ. वासंती बेन मुम्बई, श्री विलासजी महाजन, श्री अशोकजी जैन नागपुर, श्री विनोदजी निरखे मलकापुर, श्री श्रुतेशजी सातपुते जयपुर, श्री स्वप्निलजी, श्री जितेन्द्रजी राठी नागपुर, श्री मनीषजी सिद्धान्त, श्री प्रवेशजी भारिल्ल, श्री प्रसन्नजी शेटे की उपस्थिति विशेष रही।

अधिवेशन के अवसर पर नागपुर शाखा के 50 एवं अन्य शाखाओं के 30 नये सदस्य बनें।

हार्दिक बधाई ह्न

श्री श्रुतेशजी सातपुते को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की केन्द्रीय कार्यकारिणी में **महाराष्ट्र प्रान्त के प्रभारी** के रूप में मनोनीत किया गया है।

आप केन्द्रीय कार्यालय में रहकर महाराष्ट्र प्रान्त की शाखाओं एवं उनके पदाधिकारियों के बीच सम्पर्क का कार्य देखेंगे। आपको वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

विदर्भ के 22 स्थानों पर एक साथ ग्रुप शिविर

नागपुर : अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर की ओर से दिनांक 11 से 18 मई 08 तक विदर्भ के लगभग 22 स्थानों पर एकसाथ बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर शिविर के मुख्य केन्द्र नागपुर के नेहरु पुतला-इतवारी स्थित श्री महावीरस्वामी जिनमन्दिर में ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर आदि द्वारा प्रात:, दोपहर एवं सायंकाल प्रवचन एवं प्रौढ कक्षा व बाल कक्षायें ली गई।

शिविर मूर्तिजापुर, हिंगणघाट, काटोल, आर्वी, नेर पिंगलई, बेनोडा, रामटेक, चंद्रपुर, वर्धा-रामनगर, देवली, शेंदाणा खुर्द, कोंढाली व गणेशपुर आदि स्थानों पर आयोजित किया गया। इन सभी केन्द्रों पर श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्वानों द्वारा प्रवचन व बाल कक्षाओं में अध्यापनादि कार्य किया गया।

इन विद्वानों में पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री काटोल, पण्डित विजयजी आह्वाने शास्त्री देऊलगांवराजा, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित प्रशान्तजी उखलकर गोवर्धन, पण्डित संदीपजी चौगुले व्हन्नूर, पण्डित अनुरागजी शास्त्री भगवां, पण्डित चिंतामणजी औरंगाबाद, पण्डित अक्षयजी वाडकर, पण्डित सूरजजी मगदूम, पण्डित संदेशजी बोरालकर हिंगोली, पण्डित जयेशजी रोकडे मालेगांव एवं मंगलार्थी पण्डित निकुंजजी सिंघई तथा पण्डित प्रवीणजी लोखंडे के अतिरिक्त नागपुर के स्थानीय विद्वान पण्डित मनोहरराव मारवडकर, पण्डित केशवरावजी जैन, श्रीमती स्वर्णलताजी, श्रीमती शकुनजी प्रमुख थे।

इसी प्रसंग पर नागपुर में नवनिर्मित श्री वीतराग-विज्ञान भवन में दिनांक 17 मई को आयोजित भव्य समारोह में श्री महावीर विद्या निकेतन का उद्घाटन श्री माणिकचन्द धारीवाल इण्डस्ट्रीज के डायरेक्टर श्री अजितजी जैन बडौदा द्वारा सम्पन्न हुआ। तथा दिनांक 18 मई को आयोजित शिविर के भव्य समापन समारोह में डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई ने छात्रावास का उद्घाटन किया।

व्याख्यानमाला एवं बाल शिविर सम्पन्न

चिंतामणी (गुज.) : यहाँ श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ में दिनांक 9 से 15 मई तक आध्यात्मिक व्याख्यानमाला एवं बाल शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: पण्डित अश्विनभाई मलाड एवं पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली द्वारा तत्त्वार्थसूत्र तथा पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ द्वारा 'हमारे गौरव' विषय पर कक्षायें ली गई। शिशु वर्ग की कक्षा पण्डित दर्शनशाह ने ली।

इस प्रसंग पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद एवं पण्डित जिनचन्दजी हेरले के व्याख्यानों का लाभ भी मिला।

इस अवसर पर प्रात: श्री सिद्धपरमेष्ठी विधान तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

फैडरेशन का जैन युवा सम्मेलन सम्पन्न

लूणदा (उदयपुर) : अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का उदयपुर संभागीय जैन युवा सम्मेलन लूणदा में दिनांक 8 जून, रविवार को सम्पन्न हुआ। फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसाद जैन ने बताया कि कार्यक्रम में राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष **डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल** का वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल दलावत, महामंत्री श्री राजमल कोदणोत, मंत्री कचरुलाल मेहता ने मेवाड़ी पगड़ी, माला एवं शॉल ओढाकर स्वागत किया।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि शीघ्र ही युवा फैडरेशन पूरे प्रदेश में गाँव-गाँव ढाणी-ढाणी वीतराग-विज्ञान पाठशाला का संचालन करेगा। इसमें युवा कक्षा, प्रौढ कक्षा और युवाओं को स्वाध्याय प्रशिक्षण दिया जायेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने की। उन्होंने बताया कि फैडरेशन द्वारा प्रथम बार कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कैम्प का आयोजन 20 जुलाई को किशनगढ में होने जा रहा है।

सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रदेश के महामंत्री श्री राजकुमारजी जैन दर्शनाचार्य बांसवाडा पधारे। साथ ही बांसवाडा के जिला प्रभारी पण्डित रितेश डडूका भी उपस्थित थे।

एक दिवसीय इस सम्मेलन में उदयपुर संभाग की विविध शाखाओं में मुमुक्षु मण्डल युवा फैडरेशन, मुमुक्षु मण्डल महिला फैडरेशन, महिला फैडरेशन नेमिनाथ कॉलोनी, महिला फैडरेशन सैक्टर-11, युवा फैडरेशन लूणदा, आदर्शनगर, गायरियावास, सेमारी, कूण, जगत, डबोक, टोकर, साकरोदा, कुरावड आदि शाखाओं ने भाग लिया।

संचालन फैडरेशन के उदयपुर जिला प्रभारी पण्डित खेमचन्द जैन ने एवं मंगलाचरण प्रदेश प्रचार-मंत्री श्री गणतंत्र जैन बांसवाडा ने किया।

शाखाएँ व सदस्य पुरस्कृत

मंगलायतन : यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के 29वें राष्ट्रीय अधिवेशन में फैडरेशन के सदस्यों में से पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर, पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, श्री नरेशजी सिंघई नागपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, श्री नीरजजी जैन दिल्ली, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली एवं श्री जितेन्द्रजी सोगानी भोपाल को विशिष्ट सेवाओं के लिये व्यक्तिगतरूप से पुरस्कृत किया गया।

विशिष्ट कार्य हेतु श्रेष्ठ शाखा पुरस्कार के लिये फैडरेशन की नागपुर, भिण्ड, अमरमऊ, बण्डाबेलई, बड़ामलहरा, शाहगढ एवं खतौली शाखा को भी पुरस्कृत किया गया।

सभी पुरस्कार डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित कैलाशचंदजी अलीगढ, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा एवं पण्डित अभयकुमारजी देवलाली के करकमलों से प्रदान किये गये।

पवन जैन कर्मयोगी की उपाधि से अलंकृत

तीर्थधाम मंगलायतन (अलीगढ़) : यहाँ 18 दिवसीय 42वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के दौरान दिनांक 25 मई, 2008 को रात्रि में पण्डित कैलाशचन्दजी, पवनकुमारजी जैन अलीगढ़ एवं उनके पूरे परिवार का पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर आपका प्रशस्ति-पत्र के साथ श्रीफल, माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर अभिनन्दन किया गया।

इस प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल ने उनके संबंध में अपने उद्बोधन में कहा कि पण्डित कैलाशचन्दजी के हृदय में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा समझाया गया तत्त्वज्ञान कूट-कूट कर भरा हुआ है और उनके सुपुत्र श्री पवनकुमारजी ने न केवल मंगलायतन तीर्थधाम का निर्माण किया; अपितु वे उसके माध्यम से गुरुदेवश्री के प्रति अपार श्रद्धा के साथ तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में पूरी निष्ठा से लगे हुये हैं।

युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पण्डित कैलाशचन्दजी के आध्यात्मिक जीवन एवं पवनकुमारजी के कर्मठ जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर श्री पवनकुमारजी को **कर्मयोगी** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

वैराग्य समाचार

1. श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के अधीक्षक श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री की दादीजी **श्रीमती चम्पाबाई सिंघई बण्डा** (सागर) का दिनांक 24 मई 2008 को प्रात: 73 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप गहन तत्त्वाभ्यासी एवं स्वाध्यायी महिला थीं।

2. **टीकमगढ (म.प्र.) निवासी श्रीमती पुष्पादेवी चौधरी ध.प. स्व. श्री सनतकुमारजी जैन** का विगत माह देहावसान हो गया है। आपने अपने निवास पर अनेक वर्षों तक पाठशाला एवं स्वाध्याय हेतु जगह प्रदान की एवं मंगलधाम निर्माण हेतु 3200 वर्गफीट जमीन दान में दी।

आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को साहित्य की कीमत कम करने हेतु 1100/-रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

3. **छतरपुर निवासी** इंजी. सुनीलकुमार बडकुल की मातुश्री श्रीमती कान्ति देवी बडकुल का 25 मई को शांत परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया है। आप स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में 100 रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही दु:खों से छूटकर मुक्ति की प्राप्ति करें ह्न यही भावना है।

श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय का सुयश

● उपाध्याय वरिष्ठ (12th) का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत।

● छात्र जयेश जैन, उदयपुर 81.23% अंकों के साथ राजस्थान बोर्ड की मैरिट लिस्ट में तृतीय स्थान पर ।

● कुल 32 छात्रों में से 20 प्रथम व 12 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण।

● 7 छात्रों के 70% से अधिक अंक।

जयेशकुमार जैन उदयपुर (राज.) 81.23 %
राहुलकुमार जैन नौगांव (म. प्र.) 78.62 %
भावेशकुमार जैन उदयपुर (राज.) 74.46 %
रजित जैन भिण्ड (म. प्र.) 73.23 %
विवेक जैन मड़देवरा (म. प्र.) 72.62 %
सूरज मगदुम नान्द्रे (महा.) 71.54 %
अभिषेक जैन कोलारस (म. प्र.) 70.15 %

उक्त सभी प्रतिभाशाली छात्रों को महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक शुभ कामनायें।

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

खड़ैरी (म. प्र.) : यहाँ दिनांक 28 मई से 4 जून, 08 तक जैन युवा शास्त्री परिषद, खड़ैरी द्वारा बाल संस्कार शिविर एवं रत्नत्रय विधान का आयोजन किया गया।

शिविर में पूजन-विधान, बाल कक्षा, प्रौढ कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति, प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिदिन 11 घण्टे चलनेवाले धार्मिक वातावरण का लाभ स्थानीय एवं बाहर गाँव से पधारे लगभग 600 साधर्मियों ने लिया।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रतिदिन दोनों समय सैद्धान्तिक विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचनों के साथ-साथ दोपहर में नयचक्र की कक्षा ली गई। आपके अतिरिक्त पण्डित सुदीपकुमारजी बीना के प्रवचन, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली एवं पण्डित निलयजी शास्त्री सरदारशहर की छहढाला पर तथा पण्डित मनीषजी कहान की लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका पर कक्षा का लाभ मिला।

बाल कक्षायें पण्डित संभवजी शास्त्री नैनधरा, पण्डित दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा ने लीं। प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुये।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा ने सम्पन्न कराये। शिविर के संचालन में युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन का सक्रिय सहयोग रहा। ज्ञातव्य है कि इस छोटे से ग्राम में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 16 शास्त्री विद्वान हैं ।